॥श्रीगुरु

ॐ अथ निर्वाण पटुयोगमंत्रस
स्मरणं उच्यते ॥ चासणादि विधि
ख्याय परमहंस परिब्राजकः प
मालिंगं ॥ दिव्य शक्तिः ॥ मन्मथ क्षेत्रपा
शांत स्मशान गगण महासिद्धांत ॥ अ
पं निरंजन ॥ अमृत कलोल नदी ॥ वं
लोदक तीर्थ ॥ निःसंशय ऋषिः ॥ नि
र्नाम देवता ॥ निःकुल प्रीति विधिः ॥
निः केवल इपानं ॥ ऊर्ध्वाम्नाय ॥ [illegible]
रालं बपीठ ॥ संयोग साक्षी छंदः ॥ ज
पे विनियोगः ॥ उपदेश दिक्षा ॥ सं
तोष पवन ॥ द्वादशादित्या वलोक प
चिवेक वृक्ष ॥ करुणा वली ॥ आनं
मठ ॥ एकान्त [illegible]
द्धि ॥ समभाव ॥ समदर्शिनः ॥ अनु
भव परम सिद्धिः ॥ परिचय परमासन
सुखमोद्धि ॥ अकल्पित भिक्षा ॥ हं
सोच्चार ॥ सर्वभूत हंसो प्रतिपालक
वैराग्य कंथा ॥ उपदेसी न कोपिन ॥ उपशं
न सीतकं वली ॥ विचार दंड ॥ ब्रंह्म वलये
पठ ॥ द्वैपाद्या पादुका ॥ स्वेच्छ्या चरणं
कुंडलनीबंधः ॥ पराप वादे विमुक्तिः ॥ उ
न्मत राति उन्मनि [illegible] या ॥ होम नि
शो अकुति प्रमानं ॥ सत्य गुरु पदे [illegible] स
प्रकाश ॥ जीवते सीव ॥ योग मुद्रा खे
ती नीद्रा ॥ श्रीपरमानंद तीर्थ गुरू ॥
दुकां पूजयामि ॥ इति निर्वाण योग
श्रीगुरु रतं चेतन मः ॥ ८४ ॥